प्रातःक्लास 11-3-68 ओमशान्ति "शिवबाबा याद है?"

ओमशान्ति। बाप को अविनाशी सर्जन भी कहते हैं। तो जब सर्जन समझ बैठते हैं तो समझते हैं यह सब रोगी बैठे हैं। देहली में एक अजमल खां बहुत नामी-ग्रामी था। जब जाओ पेशेन्ट का ढेर बैठा रहता था। अभी वह तो है विनाशी सर्जन। यह है अविनाशी सर्जन। बाप समझाते तो हैं हैं इन सहित सभी पेशेन्ट हैं। कितना बड़ा सर्जन है। वह सर्जन तो कर के उस समय उस शरीर के ही बिमारी बतावेंगे। यह तो जानते हैं सभी जन्म-जन्मान्तर के रोगी हैं। यह रोग कब से शुरू हुई है वह भी बताते हैं। जब से रावण का राज्य शुरू हुआ बाममार्ग में गये हैं तब से सभी रोगी बन गये हैं। अभी इन सभी को निरोगी बनाना है। जो फिर 21 जन्म कब कोई बिमारी न हो। बाप को तरस पड़ता है ना। जैसे डाक्टर को तरस पड़ता है ना। पेशेन्ट की दवाई करते हैं। यह तो समझते हैं मैं अविनाशी सर्जन हूं। सभी बिचारे जन्म-जन्मान्तर के बिमारी हैं। जब से रावण का राज्य शुरू हुआ है। काम कटारी चलाना शुरू की है। एक दो को दुःख दिया है तभी से बिमार हुये हैं। तुम्हारे इस रोग की दवाई और कोई करने वाला नहीं है। बाप ऐसी दवाई करते हैं जो तुम कब बिमार ही न पड़ो। तुम एवरहेल्दी बनने लिए आये हो। एवर हेल्दी, एवर हेपी। यहां तो भल कोई हेल्दी होपरन्तु फिर कोई न कोई दुःख होता ही है। एवर हेपी रह न सके। यह तो है अविनाशी सर्जन। तुम जानते हो हो बरोबर हमको एवर हेल्दी, एवर हेपी, एवर वेल्दी बनाते हैं। तुम जानते हो इन में शिवबाबा आया हुआ है। जैसे क्रिश्चन लोग का जो सेन्ट जेवियर मरा था उनका गोया में अभी तक लाश पड़ा है। दवाईयों के आ-धार पर उनके पैर रखे हुये हैं। सभी वहां जाते हैं उनके पैरों को हाथ लगाते हैं। समझते हैं ऐसे टच करने से बिमारी हट जावेगी। बहुत क्रिश्चनलोग आते हैं। फिर बिमारों से सारा मैदान ही भर जाता है। फिर ऐसे2 सभी के माथे पर हाथ लगाते जाते हैं। भावना होती है ना। यह सब नाम कर देते हैं कोई2 को फायदा होता होगा तो नाम करदेते हैं। यह भी ड्रामा में नूंध है नाम बाला करने की। वह भी एक जन्म के लिए होता है। उस समय ठीक हुआ फिर भी कोई न कोई बिमारी हो जावेंगे। यह अविनाशी सर्जन तो ऐसा है जो 21 जन्मों लिए कब बिमारी होगी ही नहीं। तुम अविनाशी सर्जन के सामने बैठे हो। वह तो एक जन्म के लिए फायदा होता है। सो भी अल्प काल लिए सुख। तुम बच्चे 21 जन्म कबबिमार नही होंगे। कब गरीब न होंगे। सभी कामनाएं तुम्हारी पूरी हो जाती है। अभी ऐसे बाप के सामने तुम बैठे हो। कितनी खुशी कितना रिगार्ड होना चाहिए। कितना बाप को याद करना चाहिए। बाप क्या दवाईदेते हैं। कहते हैं मीठे2 बच्चे अपन को आत्मा समझ मामेकं याद करो। तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान बनो। बाप जानते हैं तुम जन्म-जन्मान्तर के पापात्मा हो। अभी तुम समझते हो हम जन्म-जन्मान्तर के लिए पुण्यात्मा बनते हैं। यहां हर बात बेहद की है। बाप भी बेहद का है। सभी कोले जाते हैं मुक्तिधाम। सतयुग में तो होते ही हैं थोड़े सिर्फ भारतवासी। छोटा झाड़ है। यह इतना बड़ा पुराना झाड़ खत्म हो जाता है। तो तुमको बहुत खुशी में रहना चाहिए। बाबा से हम एवर हेल्दी, एवर वेल्दी, एवर हेपी बनते हैं। यह भारतवासी भी जानते हैं भारत जब बहुत प्राचीन था तब आयु बहुत बड़ी थी। तुम योगी थे तो 150वर्ष की आयु थी। अभी भोगी बने हो तोअचानक बैठे2भी शरीर छोड़ देते हैं। वहां कुछ भीरोग आदि नहीं। ऐसे पैराडाईज़ के तुम मालिक बनते हो। बाप कहते हैं मीठे2 बच्चों सिर्फ अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो। तुम सतोप्रधान थे ना। स्मृति आती है ना। यह ल०ना० जब थे तो दुनिया सतोप्रधान थी ना। अभी तमोप्रधान है। यह सब राज़ तुम धारण कर औरों को भी समझाओ। बाबा तो बहुत सहज बात कहते हैं। नाम ही है सहजज्ञान। ज्ञान को नालेज कहा जाता है। यह स्कूल है ना। जैसे अल्फ बे पढ़ते हैं ना छोटे बच्चे। आगे भाईलोग पट में बैठ पढ़ाते थेछोटे बच्चों को। तुम भी पट में पढ़ते हो। मास्टर को कुर्सीआदि तो होगी ना। यह तुमको कैसे पढ़ाते हैं। अल्फ अल्ला। बे-बादशाही। कितनी सहज पढ़ाई पढ़ाते हैं। सिर्फ याद करो तो कट निकल जाये। अपना हरेक आपे ही रजिस्टर रखो। देखो हम किसको दुःख तो नहीं देते हैं। कब

झूठ तो नहीं बोलते हैं। सुनावेंगे नहीं तो सोण डन्ड पड़ जावेगा। और बुधि होती जावेगी। समझो कोई विकार में जाता है लिखेंगे नहींतो गिरते ही रहेंगे। बतलाने से बच जावेगा। यह बहुत बड़ीबिमारी है। तब ही बाप कहते हैं काम पर जीत पहनने सेतुम ब्रम्ह्मी जगत-जीत बनेंगे। अभी तुम बच्चों का दिमाग खुला है। इस तिजोरी में अविनाशी ज्ञान रत्न भरी है। कोई की गाडरेज की, कोई के लोहे की: कोई की कैसी तिजोरी होती है यह नालेज भी नम्बरवार धारण करने वाले हैं। बाप तो समझते हैं यह पेशेन्टस बैठे हैं। तुम स्टुडन्ट सभी हो तो पेशेन्टस भी हो। बहुत गरीब भी हो। तुम्हारे पास है ही क्या। थोड़े बहुत पैसे जो हैं वह भी जैसे कि नहीं है। यह सब खत्म हो जावेगा। इसलिए अभी धणी आया हुआ है पढ़ाने लिए। कहते हैं बच्चियां मनुष्यों के कल्याण लिए सेन्टर खोलते जाओ। अच्छी2 पाईन्ट समझाती रहो। तुम नायब अविनाशी सर्जन हो। वह बाप है सुप्रीम सर्जन। हम हैं नायब। तुम सब पेशेन्टस हो। हम सभी को स्वर हेल्दी स्वर वेल्दी बनाते हैं। श्रीमत पर। बाप दवारा बच्चों को श्रीमत मिलती है। तो ऐसे बाप को याद भी करना पड़े। बाबा हमको यह सिखलाते हैं। बाबा को याद करना है तभी ही विकर्म विनाश हो। बाप कहते हैं तुम सभी भक्तियां, सीताएं, ब्राईड्स हो। मैं ही ब्राईड-ग्रुम। तुम सभी को मैं ससुर घर भेज देता हूं। तुमको रावण के जेल से छुड़ाता हूं। बाबा बेहद की बातें सुनाते हैं। वह हद की बातें सुनाते हैं। ऐसे नहीं कि लंका सोने की थी। अरे सोने का भारत था। लंका थोड़े ही थी। सतयुग में यह खारे समुद्र के किनारे गांव है वह होते नहीं। यह सब रावण के राज्य में होते हैं। वहां न बम्बई आद होती नहीं। यह भी खारे पानी पर है ना। करांची आद जो भी समुद्र के किनारे हैं वहां होते नहीं। यह सब खत्म हो जावेगा। कोई कैसे मरेंगे कोई कैसे मरेंगे। मुसलधार बरसात होगी। नेचरल-कैलेमिटिज़ है ना। यह आप-मब डाएं कोई की बनाई हुई नहीं है। बम्बई भी ऐसे बनाई जो एकदम फ्ट से खत्म कर देंगे। हास्पीटल वा डाक्टर आद होंगे ही नहीं। जो दवाईयों आद मिले। बाप को यह भी समझ तो है ना। मुझे बुलाया ही है हमको पावनदुनिया में ले जाओ। तो जरूर पतित दुनिया को खत्म करना पड़े। मैं आया हूं आत्माओं को ले जाने। शरीर तो विनाशी है। शरीरों को थोड़े ही ले जाऊंगा। मूलवतन में शरीर कैसे जावेगा। तुम खुद समझते हो हमारी आत्मा में अभी लाईट नहीं है। दीवा बुझ गया है। कसेई मरता है तो तुम लोग दीवा जलाते हो। बहुत खबरदारी रखते हैं कि जाने वाली आत्मा को अंधियारा न हो। अभी तुम बाप के साथ योग लगाते हो। तो ज्योत जग जाती है। फिरसतयुग में घर-घर में सोझरा हो जाता है। अंधयारे की वहां बात ही नहीं। यह रोशनी नहीं, आत्मा का जो यह घर है उसमें सोझरा हो जाता है। देवता बन जाते हैं। अभी तुम्हारा दीवा जगा है ना। सोझरा भी आत्मा में आता है। अंधियारा भी आत्मा में होता है। आत्मा तमोप्रधान बनती है तो दीवा बुझ जाता है। अभी बाप कहते हैं मेरे साथ बुधि का योग लगाओ तो कैन्ट मिलेंगे। मैं प्युर चकमक हूं। तुम भी प्युर बन जाते हो। यह युक्ति बाप बिगर कोई बता न सके। इसलिए बाप को बुलाते हैं हे पतित-पावन आओ आकर हमको पावन बनाओ। ज्योत जगाओ। जगाओ। पिछाड़ी में सभी आत्माएं वहां से आ जावेंगी। ढेर आत्माएं आती हैं। एक थोड़े ही आती है। एक वर्ष में कितनी बुधि हो जाती है। तो जब ऊपर में खाली होने लगेगा तब हम चलेंगे। शिव बाबा की बारात हूंई। शंकर की नहीं। शिव बाबा के पिछाड़ी तुम सभी आत्माएं जावेंगे। जैसे सरसों पीसा जाता है वैसे मनुष्य पीस जावेंगे। यह तो तुम जानते हो हर 5000 वर्ष बाद बाबा आते हैं। आकर नई दुनिया स्थापन करते हैं। बाप 21 जन्मों का वर्सा देते हैं। रावण सराप देती है। राम का वर, रावण का सराप। इस खेल को तुम भी अभी समझ गये हो। भारत पर ही यह खेल बना हुआ है। 84 जन्म भी भारतवासी ही लेते हैं। और धर्म वाले नहीं। तो अभी तुम जितना बाबा को याद करेंगे उतना ही विकर्म विनाश होंगे। और फिर आप समान भी बनना है। नहीं तो मालूम कैसे पड़े। इसलिए बाबा भी लिखते हैं सपूत जाहिर। लिखते हैं इतने को सुनाया, वह कोस कर रहा है। हम लिखता हूं उन्हों को निश्चय नहीं है कि बाबा

आया हुआ है। भल पढ़ते भी रहते हैं परंतु निश्चय नहीं। निश्चय अगर हो जाये तो ऐसे बाप के मिलने बिगर रह न सके। फिर बाप कहेंगे जाकर पढ़ो। ऐसा जब हो तो कहेंगे ठीक है। एकदम भागे। बाबा आया हुआ है। जो हमको विश्व का मालिक बनाते हैं। एकदम पागल हो जाये। मिलने बिगर रह न सके। जैसे लाटरी होती है ना। यह भी घोड़ दौड़ है। इस शरीर को अश्व भी कहते हैं। रथ के ना। महमुद का घोड़ा भी बहुत श्रृंगारते हैं। क्योंकि उनका रथ था। यह भी रथ है ना। इनको तो ~~भिन्न~~ श्रृंगारते हैं नहीं। महमुद गया तो उनके घोड़े का श्रृंगारा। अभी यह भी इस रथ पर आये हैं। फिर यह बलेवावेंगे। बाद मे फिर इस आत्मा तुम सोमनाथ मंदिर बनावेंगे। अनगिनत धन लगावेंगे मंदिर में। मुझे स्वर्ग में तो मंगावेंगे नहीं। जब भक्ति मार्ग शुरू होगा तब मेरे लिए फर्स्ट क्लास मंदिर आदि बनावेंगे। इन से अच्छा कोई यादगार होता ही नहीं। फिर 5000 वर्ष बाद तुम हमारा यादगार बनावेंगे। हमारा चित्र रखे देंगे। हमको क्या मजा आवेगा।

तो बाबा भिन्न2 प्रकार से कितना समझाते रहते हैं। बाबा कितना कमाल करते हैं। एकदम 21 जन्म लिए निरोगी बना देते हैं। वहां दुःख की बात ही नहीं। योगबल से पैदाइश होती है। भ्रष्टाचार होता ही नहीं। जो इस कुल होंगे वही इन बातों को समझेंगे। बाप की मैसेन्ज सब को देना है। एक को भी छोड़ना न है। बाबा युक्तियां बतलाते रहते हैं। अखबारों द्वारा एरोपलेन द्वारा। आगे घोड़े ही ऐसे2 युक्तियां करते थे। दिनप्रति दिन उन्नति को पाते जावेंगे। जिससे सभीको मैसेन्ज मिल जावेगा। भक्ति मार्ग में याद तो करते हैं ना। परंतु आक्युपेशन को ही नहीं जानते। बाप कितनी छोटी बिन्दी है। उसमें सारा पार्ट नूंधा हुआ है। यह सारा खेल आत्मा ही बजाती है। कितनी छोटी बिन्दी है। उनका पार्ट चलता रहता है। नींद का भी पार्ट है। फिर उस स्क्रीन नहीं चलती है। आत्मा बड़ी वन्डरफुल है। यह रिकार्ड कब घीस नहीं सकता। 84 जन्मों का रिकार्ड चलता ही रहता है। इनको कुदरती ही कहते हैं। और कुछ कह न सके। तो बाप मीठे2 बच्चों को समझाते हैं कितनप वार तुमको पढ़ाया है। हर 5000 वर्ष बाद आकर पढ़ाता हूं। अनेक वार तुमको पढ़ाया है। यह पाठ है संगम युग का तो अच्छी रीत पढ़ना चाहिए ना। कोई पढ़ते हैं, कोई न पढ़ते हैं तो सभी ड्रामा। यह लड़ाई भी ड्रामा में नूंध है। फिर 5000 वर्ष बाद लगेंगे। मौत भी सब का आना ही है। नई दुनिया तुम बच्चों के लिए बननी है। तुम जानते हो भक्ति मार्ग में बहुत धक्के खाये हैं। ज्ञान में धक्के नहीं है। गृहस्थ व्यवहार में भी रहना ही है। यह ज्ञान अभी तुम बच्चों को ही है। इस अंतिम जन्म में। भक्ति तो जन्म-जन्मांतर करते हो। सिखते सिखलाते रहो। कितना बेहद का नाटक है। बच्चों को अन्दर में यह खुशी होनी चाहिए। सुमिरण करो तो खुशी भी हो। परन्तु माया ऐसी है तो सुमिरण करने नहीं देती है। तुम जितना बाप को याद करते हो उतना बाप भी याद करते हैं। बच्चे बाप को प्यार देते हैं तो बाप नहीं देंगे? कपुत बच्चे तो याद भी नहीं करेंगे। बाप भी उनको याद नहीं करेंगे। जो मुझे याद करते हैं उनको ही मैं याद करता हूं। प्यार भी करता हूं। कहते हैं ना "मिठरा घुर त घुराएं" (याद करो तो याद करूं/प्यार करो तो प्यार करूं।) तुम प्यार करो तो करेंगे। याद ही न करेंगे तो हम प्यार क्या करेंगे। बहुत अच्छे2 बच्चे हैं तो आत्मा को प्यार किया जाता है। सुनता हूं तकलीफ है तो उनकी आत्मा को बैठ सर्चलाईट देता हूं। बाकी तो ड्रामा अनुसार जिसको जाना होता है तो चले जाते हैं। भल सर्चलाईट देता हूं फिर भी चले जाते हैं। तो कहेंगे ड्रामा। उनकी आयु ही इतनी थी। इसमें दुःख की बात नहीं। हिसाब किताब चुक्तु हो गया। जाकर दूसरा पार्ट बजाना था। रोने की दरकार ही नहीं। सभी को मरना ही है फिर कितने लिए बैठ रोवेंगे। पीनी अदि पहनने वाला कोई होगा ही नहीं। सभी मिट्टी में मिल जावेंगे। इसलिए बाप कहते हैं बहुत गई थोड़ी रही। यह पुरानी दुनिया बाकी थोड़ा समय है। तुम अभी पढ़ रहे हो नई दुनिया के लिए। जो जरूर नई दुनिया होगी। पुरानी का विनाश होगा। अच्छा मीठे2 सिकीलधे बच्चों को बाप दादा का याद प्यार गुड मार्निंग। और नमस्ते। नमस्ते।